बुन्देली लोकचित्रकला में महिलाओं की भूमिका

डॉ. गीता राजपूत
अतिथि विद्वान - संगीत
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

शास्त्रीय कला से तात्पर्य उस चित्रकला से है जिसका विषय-चित्रण चित्रकला विषयक ग्रंथों में वर्णित निर्देशों के आधार पर होता है और लोककला जैसा कि नाम से स्पष्ट है - जन-जीवन की कला। इस कला में जनजीवन की झाँकी का प्रतिबिम्ब दिखता है। आत्मा के अव्यक्त विचारों का ऐसा प्रदर्शन होता है, जिसमें चित्रकला-निर्माण विषयक निर्देशों की परिधि नहीं होती, मानसिक स्वतंत्र अनुभूति होती है।[1]

बुन्देली लोकजीवन कला पक्ष की दृष्टि से हमेशा समृद्ध रहा है। बुन्देली अनपढ़ कलाकारों ने इन कलाओं की बारीकियों को कहीं से नहीं वरन् स्वान्तः सुखाय के लिए लोक में लोकचित्रकला का जन्म हुआ और लोग लोकचित्रकार बन गये, परन्तु यह लोककला व्यवसाय प्रधान नहीं होती है। इस लोक चित्रकला का सम्बन्ध उस काल से है जब से मानव सभ्यता का विकास पृथ्वी पर हुआ है। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता चला गया वैसे ही वैसे लोककला के स्तर का भी विकास धीरे-धीरे होता चला गया। जिससे आज हमारे देश के प्रत्येक प्रान्त की अपनी भाषा व बोली के समान उसकी लोकचित्रकला भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

बुन्देलखण्ड में विवाह के समय लोकचित्रकला की उत्कृष्टता को देखा जा सकता है। इस समय घर के द्वार तथा उसके आसपास की दीवारों पर लोकचित्रों का चित्रांकन किया जाता है। प्रमुख द्वार पर गणेश जी बनाये जाते हैं - जो विघ्ननाशक तथा पूज्य देवता हैं। इनका चित्रांकन आयोजन अवधि में आने वाले विघ्नों के निवारण के लिए तथा क्षेमपूर्वक आयोजन करने के लिए किया जाता है।[2] गणेश जी के आसपास उनकी दो पत्नियों स्वरूप दो शक्तियों रिद्धी एवं सिद्धी को अंकित किया जाता है।

मुख्य द्वार अथवा द्वारों के आसपास घटधारिणी बनाई जाती हैं। इनका चित्रांकन कला के क्षेत्र में समृद्धि वाहक देवी के रूप में किया जाता है, क्योंकि स्त्री सौभाग्य की सूचक होती है। घड़े में भरा हुआ जल जीवन है। उसके मुख पर लहराती हुई पत्तियाँ और पुष्प जीवन के नानाविध आनन्द व उपभोगता है।

इस लोकांचल में कुँवारी कन्याओं द्वारा क्वाँर मास में सुअटा नौरता खेला जाता है। जिसमें विविध प्रकार के कलापूर्ण आलेखनों का प्रदर्शन होता है। माना जाता है कि एक दैत्य हुआ करता था जो कन्याओं को उठाकर ले जाता था। कन्याओं ने इस दैत्य के आतंक से बचने के लिए देवी माँ की आराधना रूप में सुअटा खेला। अंत में देवी माँ द्वारा इस दैत्य का अंत होता है। परन्तु वह देवी से वरदान ले लेता है कि भविष्य में देवी माँ के पूजन के साथ उसकी भी मान्यता हो तो क्रमिक सीठियों की अंतिम सीढ़ी पर तलवार लिये हुये दैत्य रूप सुअटा वनाया जाता है। इसके एक ओर सूर्य तथा दूसरी ओर चन्द्रमा भी बनाया जाता है।

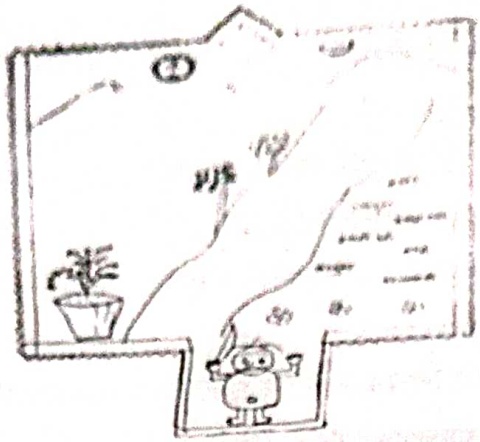

सुआटा (चित्र)[3]

बुन्देलखण्ड में शिशु जन्म पर चक्राकार साँतिया या स्वास्तिक गोबर से बनाया जाता है। इस पर जौ के दाने चिपकाते हैं। गोवर देशज और पवित्रता तथा जौ धनधान्य का प्रतीक है। घर में जनन से जो अपावनता की वृद्धि होती है, गोबर उसका निदान करता है। सांतिया गणेश जी का विघ्नविनाशक है तथा चक्राकार आलेखन गतिशीलता तथा प्रगति का प्रतीक है। जौ के नुकीले किनारे सांसारिक बाधाओं की चेतावनी हैं। इस प्रकार शिशु जन्म पर बने यह आलेखन विघ्न विनाशकता, परिवार की प्रगति, गतिशीलता, साहसिकता, धनधान्य तथा समृद्धि के संदेश वाहक हैं।[4]

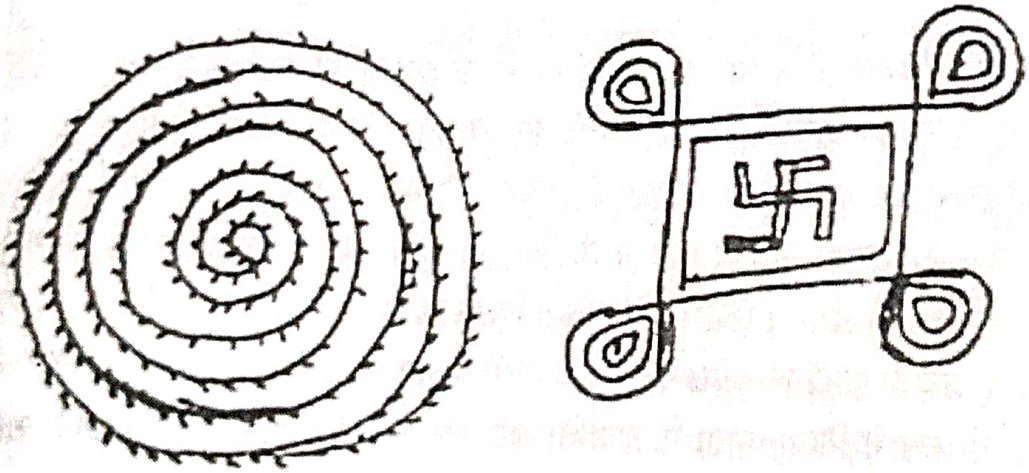

भये के सांतिया (चित्र)

यहाँ दीपावली पर भी स्त्रियों द्वारा दीवारों पर आलेखन बनाकर दीवाली का पूजन किया जाता है। इसमें विविध रंगों द्वारा लोककला के नाम पर एक वृहद आलेखन तैयार होता है। इनमें से कुछ तो अलंकारिक आलेखन यथा-सुओं तथा नागों, कचरिया, सिंघाडे अथवा मूंजी की बेलें चौखटों में बनी रहती है। इसके अतिरिक्त कुछ प्रतीक स्वरूप भी आलेखन होते हैं, जो त्रिदेवों, त्रिलोकों के प्रतीक हैं। सत्रह पुतरियाँ (आठ अष्ठदिग्पालों के रूप में एवं नौ ग्रहों के रूप में) भी बनाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त खाली जगह भरने के लिए

हुरसा, बेलन, ककई, ककवा, मोर, तुलसा-घरूआ, गणेश चौपड़, फूल, स्वस्तिक, धैला करवा, स्याऊँ, राजा-रानी, काली अमावस्या आदि की आकृतियाँ रहती हैं।[5] इसी प्रकार नागपंचमी के दिन द्वार के दोनों ओर एक वर्ग अथवा आयत में पाँच या सात नाग गेरू के द्वार बनाकर पूजे जाते हैं।

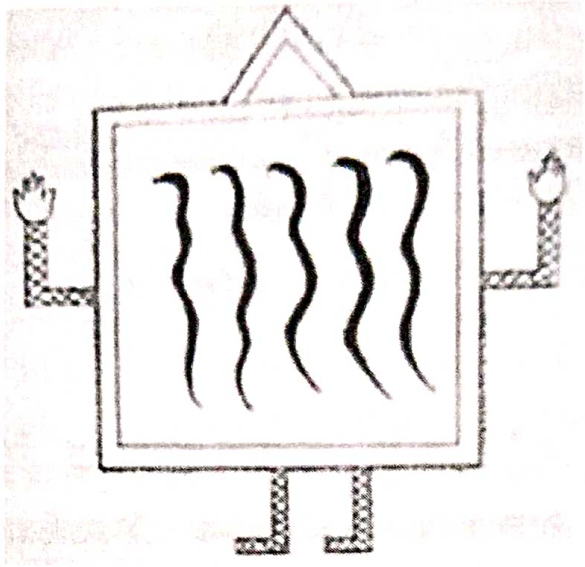

नागपाँचें (चित्र)[6]

लोकचित्रकला का एक और उदाहरण बुन्देलखण्ड की सौभाग्यवती स्त्रियों के द्वारा करवा चौथ की पूजा में प्रस्तुत होता है। इसमें दीवाल पर गोबर से लीपकर चावल के पतले घोल द्वारा अथवा रंगों द्वारा एक वृहद आलेखन तैयार किया गया है। इसमें मुख्य आलेखन वर से सम्बन्धित होता है। दूसरे मुख्य आलेखनों में बहिन एवं आखेटक के आलेखन होते हैं। इनके अतिरिक्त सूर्य, चन्द्र गणेश, पार्वती, शिव, तुलसी, शीतला (देवी) एवं अन्य प्रकार की वस्तुयें बनाई जाती हैं। लोककला के नाम पर करवा चौथ के आलेखनों का अपना अलग ही महत्व है।[7]

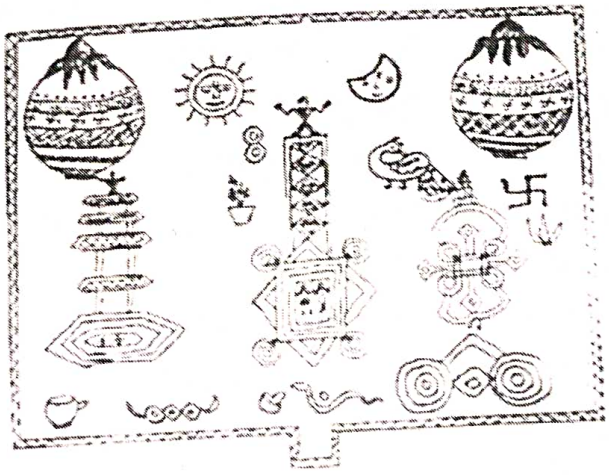

करवा चौथ (चित्र)[8]

इस प्रकार सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड मे तीज त्यौहारों तथा पर्व उत्सवों पर उनसे सम्बन्धित आलेखनों का सुन्दर चित्रांकन किया जाता है जो बुन्देली लोक चित्रकला के समृद्ध उदाहरण के रूप में प्रस्तुत होता है।

विशिष्ट बात यह है कि बुन्देलखण्ड में किसी भी तीज त्योहार या उत्सवों पर जो लोकचित्रकारी की जाती है वह अधिकांशतः महिलाओं के द्वारा की जाती है। फिर चाहे वह करवा चौथ, दीवाली जैसे त्योहारों की बता हो या फिर जन्म और विवाह जैसे संस्कारों की। घरों में होने वाली पूजा पाठ या किसी भी उत्सव पर बनने वाले चित्रांकन में महिलाओं की अहम भूमिका होती है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो हमारी लोकचित्रकला आज महिलाओं से ही जीवित है। पुरातन समय से चली आ रही हमारी संस्कृति की ये पोषक परम्परा महिलाओं के हाथों ही सुरक्षित है। यदि महिलाओं ने लोकचित्रकला के प्रति अपनी रूचि ना दिखाई होती तो शायद आज हम अपनी लोकचित्रकला से परिचित ना होते। आज के इस भौतिकवादी युग में हमें अपनी लोकचित्रकारी को संरक्षित एवं सम्वर्धित करने की आवश्यकता है। इससे प्रथम तो हमारी आगे आने वाली पीढ़ी चित्रकला से परिचित होगी दूसरा चित्रकला में रूचि रखने वाली महिलाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे क्योंकि लोकचित्रकला, चित्रकला का एक प्रमुख विषय है और वर्तमान समय में लोक चित्रकला को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है जहाँ Painting (चित्रकला) की बात आती है तो वहाँ Folk Painting का ज़िक्र जरूर होता है। राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी Folk Paintings बनाई जाती हैं Folk artist (लोक चित्रकारों) की माँग बढ़ रही है। क्योंकि चित्रकार तो बहुत मिलते हैं लेकिन लोक चित्रकार कम ही मिलते हैं ऐसे में अगर महिलाएं लोकचित्रकला (Folk Painting) के प्रति अपनी रूचि दिखाती हैं तो वह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काम कर प्रसिद्धि प्राप्त कर सकती हैं। क्योकि प्राचीन समय से ही यह कला महिलाओं के हाथों रही है और अगर आगे भी महिलाओं के हाथों में रही तो बुंदेली लोकचित्रकला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच जायेगी। जो कि हमारे लिये बड़े गौरव की बात होगी। जिससे नारी का मान तथा सम्मान बढ़ेगा तथा नारी सशक्त होगी। अतः हम कह सकते हैं कि बुंदेली लोकचित्रकला नारी सशक्तिकरण का एक सबल माध्यम बन सकती है।

सन्दर्भ

1. बुन्देली लोक संस्कृति - डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 75
2. बुन्देलखण्ड का लोकजीवन - अयोध्या प्रसाद गुप्त कुमुद पृ. 85
3. वही - पृ. 116
4. वही - पृ. 109
5. वुन्देली लोक संस्कृति - डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त पृ. 87
6. वुन्देलखण्ड का लोकजीवन - अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' पृ. 112
7. वुन्देली लोक संस्कृति - डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 88
8. वुन्देलखण्ड का लोकजीवन - अयोध्या प्रसाद गुप्त, 'कुमुद' पृ. 119